11. गुप्त काल (Gupta Period)

- इस वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- गुप्त शासक वैश्य थे (विष्णु उपासक)।
- ऐसा माना जाता है कि ये कुषाण शासकों के सामंत थे।
- इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- इन्होंने बिहार के स्थान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अत: इन्हें वास्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने ''राजा-रानी'' प्रकार का सिक्का चलाया।
- इस वंश में गरूड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थी।
- इस वंश में सोने के मुद्रा को दीनार तथा चांदी के रुपए को रूपयक कहा जाता था।
- महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक चंद्रगुप्त–I था।
- गुप्त संवत् का प्रारंभ 319-20 ई. में चंद्रगुप्त–I ने चलाया था।
- इस समय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र उज्जैन था।
- इसी वंश के समय महिला को समाज में स्थान देना शुरू कर दिया गया।
- इस वंश का दरबारी भाषा संस्कृत थी।
- इसी वंश में बाल-विवाह की प्रथा प्रारंभ हुआ।
- प्रभावती गुप्त के पुना स्थित ताम्र पत्र अभिलेख में श्रीगुप्त का वर्णन मिलता है।
- पारा का आविष्कार भी इसी वंश के समय हुआ।
- इस काल में गुजरात, बंगाल एवं तमिलनाडु वस्त्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- इसी काल में शतरंज का खेल प्रारंभ हुआ। जिसे चतुरंग कहा जाता था।
- हुणों का आक्रमण गुप्तवंश के शासक स्कंदगुप्त के समय हुआ था।
- सती प्रथा का वर्णन 510 ई. में एरण अभिलेख से मिलता है। उस समय शासक भानुगुप्त था।
- इस वंश के कुमारगुप्त शासक ने अश्वमेघ यज्ञ करवाया था।

समुद्रगुप्त

- यह चंद्रगुप्त–I का पुत्र था।
- इसे प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।
- यह कुमार देवी का पुत्र था। अत: यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- इसके बचपन का नाम कांच था।
- समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तारवादी थी। अत: यह अशोक के विपरीत था।
- इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे कर वसूलता रहा।
- इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त की तुलना ''नेपोलियन'' से की जाती है। इसलिए बी.ए. स्मिथ द्वारा समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा गया। जो Early History of India की पुस्तक में लिखा हुआ है।
- समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी ''प्रयाग प्रशस्ती'' अभिलेख (इलाहाबाद) से मिलती है।
- प्रयाग स्तंभ लेख में जहांगीर शासक का वर्णन मिलता है।
- यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा 3 समुद्र का पानी पीता था, अर्थात समस्त दक्षिण भारत समुद्रगुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- इन्होंने अश्वमेघ यज्ञ करवाया और अश्वमेघ कर्ता का उपाधि धारण किया।
- इन्होंने विक्रमांक का उपाधि धारण किया था और इसे कविराज भी कहा जाता था।
- इसके समय बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण दिया गया था।
- इसने आर्यावर्त में दिग्विजय तथा दक्षिण भारत में धर्म विजय का कार्य किया।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा और अनुमति मांगी।
- समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दिया।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।
- इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक ''वेश-भूषा'' में दिखाया गया है।
- समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।

- समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- यह एक अयोग्य शासक था।
- इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच कर खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक ''देवी चंद्रगुप्तम्'' में मिलती है।

चंद्रगुप्त-II

- इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- इसे शक विजेता भी कहा जाता था।
- इसे देवगुप्त के नाम से भी जाना जाता था।
- परम भागवत् का उपाधि इसी शासक द्वारा धारण किया गया था।
- इसके समय व्याघ्र शैली के सिक्के मिले है।
- इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें ''नवरत्न'' कहा जाता था।
- नवरत्न में सबसे प्रमुख कालीदास (संस्कृत लेखक), अमरदास (कवि), वराहमिहिर (खगोलविद्), धनवंतरि (आयुर्वेदाचार्य) आदि दरबार में थे।
- चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- इसने अपनी यात्रा विवरण ''फो-क्यू-की'' है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- इसे महायान शाखा का 'OXFORD' कहा जाता है।
- विश्व का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षशिला' विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- विश्व का पहला छात्रावास की सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय 'नालंदा विश्वविद्यालय' था।
- 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।
- स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुणों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- भानू गुप्त के 'एरण' अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- इस वंश के विनाश का कारण हुणों का आक्रमण था।
- हुण आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतो में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति थे।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय की भी सर्वोच्च था।
- शासन की सबसे छोटे इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान में जिलाअधिकारी (D.M.) के समान था।
- फाह्यान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छूआ-छूत) प्रचलित थी।
- निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज्ञ कहा जाता था।
- इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था और वे देवदासी भी हो सकती थी।
- इस समय बाल-विवाह, पदा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- इस समय वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।
- वैश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- अजंता की गुफा बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गई।
- गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आंतकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

गुप्तकालीन स्थापत कला

- इस काल में वास्तु, स्थापत्य, चित्रकला एवं मूर्त्ति कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।
- इस काल में चैत्य और विहार की जगह मंदिर निर्माण पर विशेष बल दिया गया।

➢ **गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर–**

1.	विष्णु मंदिर	–	तिगवा (जबलपुर, मध्य प्रदेश)
2.	शिव मंदिर	–	भूमरा (सतना, मध्य प्रदेश)
3.	पार्वती मंदिर	–	नचनाकुठार, (मध्य प्रदेश)
4.	भीतरगाँव मंदिर	–	भीतरगाँव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)
5.	दशावतार मंदिर	–	देवगढ़ (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)
6.	लक्ष्मण मंदिर	–	सिरपुर (ईंटों से निर्मित)
7.	विष्णु मंदिर	–	उदयगिरि (मध्य प्रदेश)
8.	शिव मंदिर	–	खोह (मध्य प्रदेश)

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

- गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी।
- बाणभट्ट ने सिंचाई के क्षेत्र में इस काल में घंटीयंत्र के प्रयोग का विवरण दिया है।
- अमर सिंह द्वारा रचित अमरकोष से पता चलता है कि इस काल में 12 प्रकार की भूमि थी।
- इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्त्रोत भू-राजस्व था।
- भू-राजस्व कर को हख्य (नगद) या मेय (अनाज) के रूप में दिया जाता था। जो 1/4 भाग से लेकर 1/6 भाग तक हो सकता था।
- इस काल में कर को **भाग** कहा जाता था।
  1. **उद्रंग–** स्थाई काश्तकारों पर लगाया जाने वाला यह एक भूमि कर था।
  2. **उपरिकर–** यह अस्थाई कृषिकों पर लगने वाला कर था।

➢ **गुप्तकालीन भूमि के प्रकार निम्न हैं–**

- **क्षेत्र–** कृषि करने योग्य भूमि।
- **वास्तु–** वास करने योग्य भूमि।
- **गोचर/चारागाह–** पशुओं के चारा योग्य भूमि।
- **सिल–** जो भूमि जोतने योग्य नहीं होती थी।
- **अप्रहत–** बिना जोती हुई जंगली भूमि

गुप्तकालीन साहित्य

- गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।
- गुप्तकाल की दरवारी भाषा संस्कृत थी।
- काशी, मथुरा, पाटलिपुत्र एवं वल्लभी आदि। इस काल के प्रमुख शैक्षणिक केन्द्र थे।
- नालंदा महाविहार की स्थापना भी इसी समय हुई जो विश्वविख्यात शैक्षणिक स्थल था।

➢ **गुप्तकालीन साहित्य एवं लेखक–**

गुप्तकालीन साहित्य	**लेखक**
मृच्छकटिकम्	– शुद्रक
मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्म् (नाटक)	– विशाखदत्त
पंचतंत्र	– विष्णु शर्मा
नीतिसार	– कामदंक
कामसूत्र	– वात्स्यसायन
कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंशम, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशयम, अभिज्ञान	– कालिदास
स्वप्नवासवदत्ता	– शाकुन्तलम्
महाभारत	– भास
सूर्यसिद्धांत	– वेदव्यास
मालती माधव	– आर्यभट्ट
गणित सार	– भवभूति
निघन्टु	– श्रीधर
	– धनवंतरि

सुदर्शन झील

क्र. सं.	राजा	कार्य	राज्यपाल
1.	चंद्रगुप्त मौर्य	निर्माण	पुष्यमित्र वैश्य
2.	अशोक	जीर्णोद्वार	तुसास्प
3.	रूद्रदामन	जीर्णोद्वार	सुविशाख
4.	स्कंदगुप्त	जीर्णोद्वार	पर्णदत्त

हुण

- हुण का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- तारामाण तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण आक्रमणकारी थे।
- मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- इसमें हुणों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग किया गया है।
- जब हूण भारत पर आक्रमण किया उस समय गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त था।
- यह मध्य एशिया का रहने वाला था। जो एक बर्बर एवं खानाबदोश थे।

➢ **हुण की दो शाखाएँ–**

1. पश्चिमी
2. पूर्वी था।

- भारत पर जिस हुण ने आक्रमण ने किया वह पूर्वी शाखा था।
- चीनी साहित्य में हुण को हुंग-नू कहा जाता था।
- यह एक जाति समूह था जिसका कोई धर्म नहीं था।

पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश

- इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।

- इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।
- प्रभाकर वर्धन की पत्नी का नाम यशोमति था।
- इन्होंने परम भट्टारक और महाराजाधिराज का उपाधि धारण किया था।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक प्रभाकर वर्धन था।

➢ **प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं–**

1. राजवर्धन, 2. हर्षवर्धन एवं 3. राजश्री।

- राजश्री की विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- राजवर्धन ने देवगुप्त की हत्या कर दी।
- गौढ़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दिया। साथ ही इसने बौद्धी वृक्ष को भी कटवा दिया।
- वर्तमान बौद्धी वृक्ष छठी पीढ़ी की है।
- शशांक शैव धर्म का अनुयायी था।
- हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।

➢ **हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी–**

1. राजश्री का पता लगाना
2. साम्राज्य को संभालना।

- हर्षवधन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
- हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज को राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

➢ **हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की–**

1. नागानंद
2. रत्नावली
3. प्रियदर्शिका।

- हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।

➢ **इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की–**

1. कादम्बरी
2. हर्षचरित्र।

- हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता था।
- हषर्वर्धन को भारत का अंतिम हिंदु सम्राट माना जाता है।
- इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।
- इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का प्रमुख केन्द्र था।
- इसके समय चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- 629 ई. में जब ह्वेनसांग भारत आया था तब नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- 'सी-यू-की' की रचना ह्वेनसांग द्वारा किया गया था।
- इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (Student) तथा अध्यापन (Teacher) का कार्य किया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए 100 गांवों की आय हर्षवर्धन ने दान के रूप में दिया।
- ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- कुम्भ मेला का प्रारंभ हर्षवर्धन के द्वारा ही माना जाता है।
- हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु वह बौद्ध धर्म के महायान शाखा से प्रभावित था।
- हषर्वर्धन के समय उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर कन्नौज था।
- इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे 5वीं बौद्ध संगीति भी कहते हैं।
- हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत का अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी पुलकेशिन द्वितीय का कर्नाटक में स्थित 'एहोल' अभिलेख से मिलती है।
- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति में आ गई।
- इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को ''युग-परिवर्तन'' का काल कहते हैं।
- हर्षवर्धन अंतिम बौद्ध राजा था जो संस्कृत का महान विद्वान था।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर यशोवर्मन का शासन हुआ।

❑❑❑